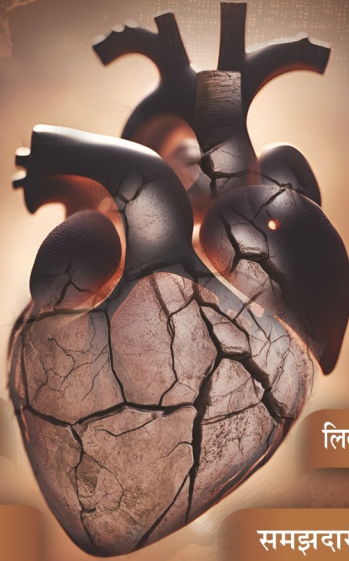


हफ्तावार रिसाला : 401
Weekly Booklet : 401

Dil Ki Sakhti Ke Chand Asbab (Hindi)

दिल की सख्ती के चन्द अस्बाब

सफ़्हात : 22



05 दिल की पैदाइश का मक़सद

लिबास नेकों वाला और.... 14

11 ज़ियादा हंसना

समझदारी की बात 18

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी

دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ
الْعَالِيَهُ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना
अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये
إِنْ شَاءَ اللَّهُ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ यह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी
रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले । (مُسْتَرْفَع ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे गुमे मदीना
व बकीअ व मरिफ़रत
13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला “दिल की सख्ती के चन्द अस्बाब”

शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी हज़रत
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रज़वी
دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाया है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब
दे कर पेश किया है और मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस रिसाले में
अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट को (ब
ज़रीअए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेंट (दावते इस्लामी इन्डिया)

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात ।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

दिल की सख्ती के चन्द अस्बाब⁽¹⁾

दुआए अतार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 20 सफ़हात का रिसाला : “दिल की सख्ती के चन्द अस्बाब” पढ़ या सुन ले उसे नर्म दिल व नर्म मिजाज बना और उसे मां बाप समेत बे हिसाब बख़्शा दे ।
 امين بجا خاتم النبیین صلی الله علیه واله وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : “तुम अपनी मजलिसों को मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरस्ता करो क्योंकि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना ब रोज़े क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा ।” (جامع صغير، ص 280، حديث: 4580)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

आका की चार दुआएं

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! खुशूअ की जगह दिल है जब कि आ'जा इस के जाहिर होने का मक़ाम । खुशूअ का हासिल होना अल्लाहु रब्बुल इज्जत की निहायत अज़ीम ने'मत है । शैतान पहले तो बन्दे को नमाज़ से रोकता है, अगर बन्दा फिर भी नमाज़ पढ़ने लगता है तो मुख़लिफ़ दुन्यवी चीज़ें याद दिला कर नमाज़ की रूह या'नी खुशूओ ख़ुजूअ ख़त्म करने की कोशिश करता है । बुजुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ खुशूओ ख़ुजूअ के साथ नमाज़ें अदा किया करते थे, हमें भी खुशूओ ख़ुजूअ हासिल

① ... यह मज़मून अमीरे अहले सुन्नत دامت بركاتهم العالیه की किताब “फ़ैजाने नमाज़” सफ़हा 339 ता 355 से लिया गया है ।

करने के लिये ख़ूब कोशिश करनी और इसे पाने के लिये गिड़गिड़ा कर दुआएं मांगनी चाहिएं। हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ यूँ दुआ मांगा करते :

﴿1﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ۔ (ترمذی، 5/293، حدیث: 3493 مختصراً)

ऐ अल्लाह ! मैं उस दिल से तेरी पनाह लेता हूँ जो खुशूअ इख़्तियार न करे।

﴿2﴾ رَبِّ اجْعَلْنِىْ لَكَ شَكَارًا، لَكَ ذَكَرًا، لَكَ رَهَابًا، لَكَ مَطْوَعًا، لَكَ مُخْبِتًا، اِلَيْكَ

اَوَاها مُنِيْبًا۔ (ترمذی، 5/323، حدیث: 3562 مختصراً)

ऐ मेरे रब ! मुझे तेरा बहुत शुक्र गुज़ार, तेरा ब कसरत ज़िक्र करने वाला, तुझ से बहुत डरने वाला, तेरा निहायत फ़रमां बरदार, तेरे लिये खुशूअ इख़्तियार करने वाला, तेरी बारगाह में बहुत गिर्या व ज़ारी करने वाला और रुजूअ लाने वाला बना।

﴿3﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ، وَمِنْ نَفْسٍ لَا تَشْبَعُ، وَمِنْ

دَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا۔ (مسلم، 1118، حدیث: 6906)

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह लेता हूँ उस इल्म से जो नफ़अ न दे, उस दिल से जो खुशूअ इख़्तियार न करे, उस नफ़स से जो सैर न हो, उस दुआ से जो कबूल न हो।

﴿4﴾ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ صَلَاةٍ لَا تَنْفَعُ۔ (ابوداؤد، 2/131، حدیث: 1549)

ऐ अल्लाह ! मैं तेरी पनाह लेता हूँ उस नमाज़ से जो नफ़अ न दे।

इल्मे नाफ़ेअ से दिल में खुशूअ पैदा होता है

अल्लामा अब्दुररुफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ दुआए मुस्तफ़ा नम्बर 3 के तहत फ़रमाते हैं : बारगाहे इलाही में “उस इल्म से जो नफ़अ न दे” और “उस दिल से जो खुशूअ इख़्तियार न करे” एक साथ अर्ज करने में यह

इशारा है कि इल्मे नाफ़ेअ (या'नी नफ़अ देने वाले इल्म) से दिल में खुशूअ पैदा होता है ।
(فیض القدير، 194/2)

“इल्मे नाफ़ेअ” किसे कहते हैं ?

इल्मे नाफ़ेअ (या'नी नफ़अ देने वाला इल्म) वोह होता है जो दिल में असर कर जाए और उस में अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की मा'रिफ़त, अज़मत, ख़ौफ़, ता'ज़ीम और महब्बत डाल दे और जब येह चीज़ें दिल में ठहर जाती हैं तो दिल में खुशूअ पैदा होता है और दिल की पैरवी में तमाम आ'जा भी खुशूअ इख़्तियार करते हैं ।
(مجموع رسائل ابن رجب، 16/1)

शैतान क़रीब नहीं आता

हज़रते सय्यिदुना सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “जिस शख़्स के दिल में खुशूअ होता है शैतान उस के क़रीब नहीं आता ।”
(بصائر ذوی التّمييز، 542/2)

गुनाह खुशूअ की राह में बहुत बड़ी रुकावट हैं

अगर आप खुशूओ खुजूअ से नमाज़ें पढ़ना चाहते हैं तो सब से पहले गुनाहों से परहेज़ कीजिये, गुनाह खुशूअ की राह में बहुत बड़ी रुकावट हैं, गुनाह पर काइम रहते हुए खुशूअ हासिल नहीं हो सकता ।

दिलों को नर्म करने वाले काम

अगर दिल में नरमी व खुशूअ लाना चाहते हैं तो नेकियों की कसरत कीजिये और एक अज़ीमुश्शान नेकी तिलावते कुरआन भी है । तिलावत के सबब दिल नर्म होता है, नीज़ लोगों के साथ भलाई करना भी दिल की नर्मी का बाइस है । एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में दिल की सख्ती की शिकायत की तो आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इर्शाद फ़रमाया :

“अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा दिल नर्म हो जाए तो मिस्कीनों को खाना खिलाओ और यतीम के सर पर हाथ फेरो।” (شعب الایمان، 7/472، حدیث: 11034)

यतीम के सर पर हाथ फेरने की फज़ीलत

मक्तबतुल मदीना के रिसाले “एहतिरामे मुस्लिम” सफ़हा 12 ता 13 पर है : जिस बच्चे या बच्ची का बाप फ़ौत हो जाए उस को **यतीम** कहते हैं। जब बच्चा बालिग़ या बच्ची बालिगा हो गई तो अब यतीम के अहकाम ख़त्म हुए। यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक का भी बड़ा सवाब है। चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अज़ीम है : “जो शख्स **यतीम** के सर पर महज़ **अल्लाह** पाक के लिये हाथ फेरे तो जितने बालों पर उस का हाथ गुज़रा हर बाल के मुक़ाबिल में उस के लिये नेकियां हैं और जो शख्स **यतीम** लड़की या **यतीम** लड़के पर एहसान करे मैं और वोह जन्नत में (दो उंगलियों को मिला कर फ़रमाया) इस तरह होंगे।” (مسند امام احمد، 8/272، حدیث: 22215)

उम्मत के ग़म ख़वार आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “लड़का यतीम हो तो उस के सर पर हाथ फेरने में आगे की तरफ़ ले आए और बच्चे का बाप हो तो हाथ फेरने में गरदन की तरफ़ ले जाए।” (مجم اوسط، 1/351، حدیث: 1279)

दिल की सख्ती कैसे दूर हो ? (वाक़िअ)

उम्मुल मुअमिनीन तमाम मुसल्मानों की प्यारी प्यारी अम्मीजान, हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا से एक ख़ातून ने क़सावते क़ल्बी (या'नी दिल की सख्ती) की शिकायत की तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : “**मौत को कसरत से याद किया कर तेरा दिल नर्म हो जाएगा।**” जब उस औरत ने ऐसा किया तो उस का दिल नर्म हो गया। पस उस ने उम्मुल मुअमिनीन हज़रते बीबी आइशा सिद्दीका رَضِيَ اللهُ عَنْهَا का शुक्रिय्या अदा किया।

(الروض الفائق، ص 23)

दिल की पैदाइश का मक़सद

इमाम शरफुद्दीन हुसैन बिन मुहम्मद तीबी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं :
दिल को पैदा करने का मक़सद सिर्फ़ यह है कि वोह अल्लाह पाक के लिये
खुशूअ करे ताकि इस के सबब सीना खुल जाए और दिल नूर डाले जाने
के काबिल हो जाए, जब दिल में खुशूअ नहीं होगा तो वोह सख्त कहलाएगा
और सख्त दिली से पनाह मांगना ज़रूरी है, अल्लाह करीम (पारह 23
सूरतुज्जुमर आयत 22 में) इर्शाद फ़रमाता है :

فَوَيْلٌ لِلْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللَّهِ ۗ تَرَجَمَ كَنْزُ الْجِيمَانِ : तो ख़राबी है
उन की जिन के दिल यादे खुदा की तरफ़ से
(प 23, الأمر: 22)
सख्त हो गए हैं । (شرح الطیبی، 5/210)

सख्त दिल की पहचान

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अज़िज़
दिल ज़रखेज़ ज़मीन की तरह है जिस में पैदावार ख़ूब होती हो और सख्त
दिल उस पथरीले अलाके की तरह है जिस में फैलाया हुवा बीज बेकार
जाता है । (मिरआतुल मनाजीह, 4/60) (एक और मक़ाम पर फ़रमाते हैं) जिस
दिल में अल्लाह (पाक) के ज़िक्र से चैन, अज़ाब के ज़िक्र से ख़ौफ़, जन्नत
के ज़िक्र से शौक़, हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ज़िक्र से विज्दान (या'नी क़ल्बी
लज़ज़त) न पैदा हो वोह सख्त है, अल्लाह (पाक) इस से बचाए ।

(मिरआतुल मनाजीह, 4/59)

आप का नाम सुनते ही सरकार काश दिल मचलने लगे जान हो बे करार

(वसाइले बख़्शाश, स. 224)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



अल्लाह के नज़दीक सूरज से ज़ियादा रौशन चेहरा किस का होगा ?

एक हृदीसे कुदसी में अल्लाह पाक इर्शाद फ़रमाता है : मैं हर नमाज़ी की नमाज़ क़बूल नहीं फ़रमाता बल्कि मैं उस की नमाज़ क़बूल करता हूँ जो मेरी अज़मत की खातिर तवाज़ोअ (या'नी अज़िज़ी) इख़्तियार करे, मेरी हराम कर्दा चीज़ों से अपनी ख़्वाहिशात को रोके रहे, मेरी ना फ़रमानी पर इसरार न करे, भूके को खाना खिलाए, बे लिबास को लिबास पहनाए, मुसीबत ज़दा पर रहूम करे, मुसाफ़िर को ठिकाना दे और येह सब कुछ मेरे लिये करे। मेरी इज़्जत जलाल की क़सम ! उस के चेहरे का नूर मेरे नज़दीक सूरज के नूर से ज़ियादा रौशन होगा, इलावा अर्ज़ी मैं उस की जहालत को हिल्म (या'नी बुर्दबारी, नरमी) और तारीकी (या'नी अंधेरे) को रौशनी बना दूंगा, वोह मुझे पुकारेगा मैं उसे लब्बैक कहूंगा, मुझ से सुवाल करेगा मैं उसे अता करूंगा, मुझ पर क़सम उठाएगा मैं उस की क़सम पूरी करूंगा नीज़ उसे अपना कुर्ब अता कर के उस की निगहबानी करूंगा और अपने फ़िरिशतों के ज़रीए उस की हिफ़ाज़त करवाऊंगा।

(क़त्लुलعمال, 4/214, حدیث: 20100)

गुनाहों से दिल काला हो जाता है

जिस का दिल सख़्त हो जाता है उस से ख़ुशूअ रुख़सत हो जाता है, दिल सख़्त होने के कई अस्बाब हैं, इन में से एक सबब गुनाह करना भी है। हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे दो जहान صَلَّي اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने अ़ली निशान है : जब बन्दा कोई गुनाह करता है तो उस के दिल में एक सियाह नुक्ता (Black dot) पैदा होता है, जब उस गुनाह से बाज़ आ जाता है और तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लेता है तो उस का

दिल साफ़ हो जाता है और अगर फिर गुनाह करता है तो वोह नुक्ता बढ़ता है यहां तक कि पूरा दिल सियाह हो जाता है। और येही वोह जंग है जिस का जिक्र अल्लाह पाक ने इस तरह फ़रमाया है :

كَلَّا بَلْ سَاءَ مَا يَكْسِبُونَ ﴿٣٠﴾
 (پ 30، لطائفین: 14)

तरजमए कन्जुल ईमान : कोई नहीं बल्कि उन के दिलों पर जंग चढ़ा दिया है उन की कमाइयों ने।

(ترمذی، 5/220، حدیث: 3345)

जी चाहता है फूट के रोकें तेरे ग़म में सरकार ! मगर दिल की क़सावत नहीं जाती
 (वसाइले बख़्शिश, स. 382)

ज़ालिम से मिलना दिल काला करता है

बिग़ैर मक़सद के हुक्काम से मिलना मुनासिब नहीं होता इस के कई मन्फ़ी असरात (Bad effects) हो सकते हैं : बादशाहे वक़्त ने इमामुल अस्फ़िया हज़रते दावूद त़ाई رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ से मुलाक़ात करनी चाही तो आप ने इन्कार फ़रमा दिया और हज़रते सय्यिदुना इमाम अबू यूसुफ़ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के हवाले से येह रिवायत बयान की, कि رُؤْيَةُ وَجْهِ الظَّالِمِ تَسْوَدُّ الْقُلُوبَ या'नी ज़ालिम का चेहरा देखना दिल को काला करता है।

(सब्द सनाबिल, स. 95 मुलख़ब़सन)

गुनाह कुफ़्र के क़ासिद हैं

बुजुर्गों का फ़रमान है : “गुनाह कुफ़्र के क़ासिद (या'नी अस्बाब) हैं” या'नी इस ए'तिबार से कि गुनाह दिल में सियाही पैदा कर के उसे इस तरह ढांप लेते हैं कि फिर वोह कभी किसी भलाई को क़बूल नहीं करता, उस वक़्त दिल सख़्त हो जाता है और उस से हर रहमतो मेहरबानी और

ख़ौफ़ निकल जाता है, फिर वोह शख्स जो चाहता है कर गुज़रता है और जो बात उसे पसन्द होती है उस पर अमल करता है, नीज़ अल्लाह पाक के मुक़ाबले में शैतान को अपना दोस्त बना लेता है तो वोह शैतान उसे गुमराह करता, वर्गलाता, झूठी उम्मीदें दिलाता और जिस क़दर मुम्किन हो उस से क़फ़्र से कम किसी बात पर राजी नहीं होता ।

(जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल, 1/63)

दिन रात मुसल्लसल है गुनाहों का तसल्लसुल कुछ तुम ही करो ना येह नुहूसत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश, स. 382)

दिल पर मोहर कर दी गई तो नेकी की तौफ़ीक़ न मिलेगी

हज़रते सय्यिदुना हसन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : “अल्लाह पाक और बन्दे के दरमियान गुनाहों की एक तै शुदा हद है जब बन्दा उस हद तक पहुंच जाता है तो अल्लाह पाक उस के दिल पर मोहर (Seal) कर देता है इस के बा'द उसे नेकी की तौफ़ीक़ नहीं दी जाती ।”

(65/4, احیاء العلوم, एहयाउल उलूम (उर्दू), 4/157)

या अल्लाह पाक ! रहूम की दरख़्वास्त है, मेरे दिल से गुनाहों की सियाही को मिटा कर इस में नेकियों का नूर भर दे, मौला ! वरना कहीं का न रहूंगा ।

गुनाहों की अ़दत बढ़ी जा रही है करम या इलाही करम या इलाही
गुनाहों की तारीकियां छ गई हैं करम या इलाही करम या इलाही
तू अ़त्तार को बे सबब बख़्श मौला करम कर करम कर करम या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 111)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



दिल की सख्ती का एक सबब फुज़ूल गोई है

हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने हवारियों को नसीहत करते हुए इर्शाद फ़रमाया : “ऐ लोगो ! तुम फुज़ूल बोलने से बचते रहो, कभी भी जि़क़ुल्लाह के इलावा अपनी ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकालो, वरना तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे, हालां कि दिल नर्म होते हैं (लेकिन फुज़ूल गोई इन्हें सख़्त कर देती है) और सख़्त दिल अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त की रहमत से महरूम होता है (या’नी अगर तुम अल्लाह पाक की रहमत के उम्मीदवार हो तो अपने दिलों को सख्ती से बचाओ)।” (عیون الکیایات، ص 119)

या रब ! न ज़रूरत के सिवा कुछ कभी बोलूँ

अल्लाह जुबां का हो अता कुफ़्ले मदीना

(वसाइले बख़्शिश, स. 93)

लज़ीज़ चीज़ें खाते रहना दिल की सख्ती का बाइस है

हज़रते सय्यिदुना इमाम मुहम्मद बिन मुहम्मद बिन मुहम्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “राहे आख़िरत पर चलने वाले बुजुर्गोंने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की मुबारक आदत थी कि वोह सालन हमेशा नहीं बल्कि कभी कभार ही खाते थे, और नफ़्स की ख़्वाहिशात से बचते थे, क्यूं कि इन्सान अगर ख़्वाहिश के मुताबिक़ लज़ीज़ चीज़ें खाता रहे तो इस से उस के नफ़्स में अकड़ (या’नी सरकशी, मग़रूरी) और दिल में सख्ती पैदा होती है, नीज़ वोह दुन्या की लज़ीज़ चीज़ों से इस क़दर मानूस (या’नी उन का इस क़दर आदी) हो जाता है कि दुन्यवी लज़्ज़तों की महब्बत उस के दिल में घर कर जाती है और वोह रब्बे काएनात جَلُّ جَلَالِهِ की मुलाक़ात और उस की बारगाहे आली में हाज़िरी को भूल जाता है, उस के हक़ में दुन्या

जन्नत और मौत कैदखाना बन जाती है। अलबत्ता वोह अपने नफ़्स पर अगर सख्ती डाले और उस को लज़्ज़तों से महरूम रखे तो दुन्या उस के लिये कैदखाना बन कर तंग हो जाती है और उस का नफ़्स उस कैदखाने और तंगी से आज़ादी चाहता है और मौत ही उस की आज़ादी है। हज़रते सय्यिदुना यहूया बिन मुअज़ राजी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के फ़रमान में इसी बात की तरफ़ इशारा है चुनान्चे आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : “ऐ सिद्दीक़ीन के गिरोह ! जन्नत का वलीमा खाने के लिये अपने आप को भूका रखो क्यूं कि नफ़्स को जिस क़दर भूका रखा जाए उसी क़दर खाने की ख़्वाहिश बढ़ती है।”

(احياء العلوم، 3/113)

कोहे लुबनान के औलिया की नसीहत

पेट भर कर खाने का एक नुक़सान येह होता है कि आदमी इबादत की लज़्ज़त और मिठास से महरूम हो जाता है, चुनान्चे अमीरुल मुअमिनीन मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा हज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : मैं जब से मुसलमान हुवा हूं कभी पेट भर कर नहीं खाया ताकि इबादत की हलावत (या'नी मिठास) नसीब हो। हज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं कोहे लुबनान में कई औलियाए किराम की सोहबत में रहा, उन में से हर एक ने मुझ से येही कहा : जब लोगों में जाओ तो उन्हें चार बातों की नसीहत करना, उन में एक नसीहत येह थी कि जो ज़ियादा खाएगा उसे इबादत की लज़्ज़त नसीब नहीं होगी।

(مشہاج العابدین، ص 84/98)

शौक़ खाने का बढ़ चला या रब नफ़्स का दाव चल गया या रब !

ख़ूब खाने की ख़ू मिटा या रब नेक बन्दा मुझे बना या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



दिल की सख्ती का एक सबब जि़यादा हंसना

ऐ आशिक़ाने रसूल ! हंसना अगर्चे जाइज़ है लेकिन “जि़यादा हंसना” ग़फ़्लत में डालने वाला, ग़ैर मुनासिब और दिल को मुर्दा कर देने वाला काम है, ग़ैर ज़रूरी हंसी से बचने के सबब **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** रूहानिय्यत में तरक्की हासिल होगी। लिहाज़ा इस सिल्लिसले में कुछ इर्शादात पेश किये जाते हैं कि कहीं यादे आख़िरत के मुतअल्लिक़ हमें सन्जीदगी मिले ! रसूले करीम **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने अज़ीम है : “जि़यादा मत हंसो ! क्यूं कि जि़यादा हंसना दिल को मुर्दा कर देता है।” (ابن ماجه، 4/465، حديث: 4193)

हंसना ग़फ़्लत की अ़लामत है

जि़यादा हंसना आख़िरत से ग़फ़्लत की अ़लामत (या'नी निशानी) है। सरकारे मदीना **صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इर्शाद फ़रमाया : **لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَضَحِكْتُمْ** : या'नी अगर तुम वोह जान लेते जो मैं जानता हूं तो कम हंसते और जि़यादा रोते। (بخاری، 3/218، حديث: 4621)

क्या सहाबा हंसते थे ?

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا से पूछा गया कि क्या **रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सहाबा हंसते थे ? फ़रमाया : हां और उन के दिलों में ईमान पहाड़ से मज़बूत था। (شرح السنه، 6/375، حديث: 3244)

हज़रते मुफ़ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक के तहत फ़रमाते हैं : शायद साइल (या'नी पूछने वाले) ने वोह हदीस सुनी होगी, “जि़यादा हंसना दिल मुर्दा करता है” तो उस ने सोचा होगा कि हज़रते सहाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) कभी न हंसते होंगे (क्यूं कि) वोह हज़रात (तो) जि़न्दा दिल थे फिर उन्हें हंसी से क्या तअल्लुक़ ! (सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا



के “हां” में) जवाब (देने) का मक़सद येह है कि हंसना हराम नहीं हलाल है, वोह हज़रात (या’नी सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) वोह हंसी न हंसते थे जो दिल मुर्दा कर दे या’नी हर वक़्त हंसते रहना बल्कि वोह (साहिबान वोह) हंसी हंसते थे जो दिल को शिगुफ़ता (या’नी तरो ताज़ा) रखे और सामने वाले को भी शिगुफ़ता (या’नी तरो ताज़ा) बना दे। (मिरआत, 6/404)

दिल की मौत का सबब

अमीरुल मुअमिनीन मुसल्मानों के दूसरे खलीफ़ा हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ’ज़म رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो ज़ियादा हंसता है उस का रो’ब कम हो जाता है और जो मिज़ाह (या’नी मज़ाक़ मस्ख़री) करता है लोगों की नज़रों से गिर जाता है, जो किसी काम को कसरत से (या’नी ज़ियादा) करता है वोह उसी के हवाले से पहचाना जाता है, जो ज़ियादा बोलता है वोह ज़ियादा ग़लतियां करता है और जिस की ग़लतियां ज़ियादा हो जाएं उस की हया कम हो जाती है और जिस की हया कम हो जाए उस की परहेज़ गारी कम हो जाती है और जिस की परहेज़ गारी कम हो जाए उस का दिल मर जाता है। (एहयाउल इलूम (मुतर्जम), 3/389)

क्या येह अल्लाह से डरने वालों का अन्दाज़ है ? (वाक़िअ)

हज़रते सय्यिदुना वुहैब बिन वर्द رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ ने ईदुल फ़ित्र के दिन कुछ लोगों को हंसते हुए देखा तो इर्शाद फ़रमाया : अगर इन लोगों की मग़िफ़रत हो गई है तो क्या येह शुक्र करने वालों का काम है और अगर इन की बख़्शिश नहीं हुई तो क्या येह ख़ाइफ़ीन (या’नी डरने वालों) का अन्दाज़ है ? (एहयाउल इलूम (मुतर्जम), जि. 3, स. 390) येह रिवायत ग़फ़्लत वाली हंसी के मुतअल्लिक़ होगी वरना ईद पर खुशी का इज़हार करना चाहिये।



अल्लाह से डरने वाले कौन हैं ?

सहाबी इब्ने सहाबी हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا से पूछा गया कि खाइफ़ीन (या'नी अल्लाह पाक से डरने वाले) कौन हैं ? फ़रमाया : उन के दिल ख़ौफ़े खुदा से ज़ख़्मी हैं, उन की आंखें रोती हैं, वोह कहते हैं कि हम कैसे खुशी करें जब कि मौत हमारे पीछे है और क़ब्र हमारे सामने है और क़ियामत हमारे वा'दे की जगह है, जहन्नम पर से गुज़रना है और अल्लाहु रब्बुल इज़्ज़त के सामने खड़ा होना है। (227/4, احیاء العلوم)

रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : “जो हंसता हुवा गुनाह करता है वोह रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा।” (एहयाउल इलूम (उर्दू), 3/391) ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना अमिर बिन कैस رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं : “जो शख़्स दुन्या में बहुत हंसता है वोह क़ियामत में बहुत रोएगा।” (تنبیه المغترين، ص 42)

वोह फिर कभी हंसता न देखा गया (वाक़िआ)

अज़ीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना इमाम हसन बसरी رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने एक शख़्स को देखा कि वोह हंस रहा है आप ने फ़रमाया : يَا فِتْنَى هَلْ مَرَرْتَ بِالصِّرَاطِ؟ या'नी : ऐ जवान ! क्या तू पुल सिरात से गुज़र चुका है ? उस ने कहा : नहीं। फिर फ़रमाया : هَلْ تَدْرِي إِلَى الْجَنَّةِ تَصِيدُ أَمْرًا إِلَى النَّارِ؟ या'नी क्या तू जानता है कि तू जन्नत में जाएगा या दोज़ख़ में ? उस ने कहा : नहीं ! फ़रमाया : فَمَا هَذَا الضُّحْكُ؟ या'नी फिर येह हंसना कैसा है ? (227/4, احیاء العلوم) या'नी जब ऐसी मुश्किलात तेरे सामने हैं और तुझे अपनी नजात का भी इल्म नहीं तो फिर किस खुशी पर हंस रहा है ? इस के बा'द वोह शख़्स किसी से हंसता हुवा नहीं देखा गया। (अख़्लाकुस्सालिहीन, स. 49)

जन्नत में कोई रोए तो तअज्जुब की बात है

हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद बिन वासेअ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : जब तुम जन्नत में किसी को रोता हुआ देखोगे तो क्या तुम्हें उस के रोने से तअज्जुब नहीं होगा ? अर्ज की गई : ज़रूर होगा । इर्शाद फ़रमाया : तो जो दुनिया में हंसता है लेकिन उसे यह मा'लूम न हो कि उस का ठिकाना क्या है (या'नी जन्नत पाना है या जहन्नम में जाना है) तो उस (हंसने वाले) शख्स पर इस से भी ज़ियादा तअज्जुब है । (एहयाउल उलूम (उर्दू), 3/391)

मौत का यकीन रखने वाला कैसे हंसे ?

हदीसे कुदसी में आया है (अल्लाह पाक फ़रमाता है) :
 عَجَبًا لِمَنْ أَيَقِنُ بِالْمَوْتِ كَيْفَ يَفْرَحُ
 या'नी तअज्जुब है उस शख्स पर जो मौत का यकीन रखता है, फिर कैसे हंसता है ! (شعب الإيمان، 1/223، حديث: 212)

40 साल तक न हंसे

हज़रते सय्यिदुना सईद बिन अब्दुल अज़ीज رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ चालीस साल तक न हंसे यहां तक कि आप की वफ़ात हो गई । इसी तरह हज़रते ग़ज़्वान रकाशी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ नहीं हंसते थे । (تنبيه المعتبرين، ص 42)

50 साल तक हंसते न देखा

हज़रते सय्यिदुना औन बिन अबू जैद رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : मैं हज़रते अता सुलमी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के पास पचास साल रहा मैं ने उन को कभी हंसते हुए नहीं देखा । (تنبيه المعتبرين، ص 42)

लिबास नेकों वाला और.....

हज़रते मुअज़ा अदविय्या رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهَا एक दिन ऐसे नौ जवानों पर गुज़रीं जो कि हंस रहे थे और उन का लिबास सूफ़ (ऊन) का था या'नी लिबास

سُبْحَنَ اللهُ، لِبَاسِ الصَّالِحِينَ وَضِحْكَ الْغَافِلِينَ : سُبْحَانَ اللهِ
 ! لِبَاسِ النَّاسِ ! لِبَاسِ النَّاسِ ! لِبَاسِ النَّاسِ ! لِبَاسِ النَّاسِ !

(تنبيه المقترين، ص 42)

नमाज़ में हंसने के अहकाम

«1» रुकूअ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ ने कहक़हा लगा दिया या'नी इतनी आवाज़ से हंसा कि आस पास वालों ने सुना तो वुजू भी गया और नमाज़ भी गई, अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि सिर्फ़ खुद सुना तो नमाज़ गई वुजू बाकी है, मुस्कुराने से न नमाज़ जाएगी न वुजू। मुस्कुराने में आवाज़ बिल्कुल नहीं होती सिर्फ़ दांत ज़ाहिर होते हैं «2» बालिग़ ने नमाज़े जनाज़ा में कहक़हा लगाया तो नमाज़ टूट गई वुजू बाकी है। «3» नमाज़ के इलावा कहक़हा लगाने से वुजू नहीं जाता मगर दोबारा कर लेना **मुस्तहब** है।
 (مرآة الفلاح، ص 84) हमारे प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कभी भी कहक़हा नहीं लगाया लिहाज़ा हमें भी कोशिश करनी चाहिये कि हम जोर जोर से न हंसें।

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमारे दिलों की सख्ती दूर कर के इन्हें अपनी याद से मा'मूर फ़रमा, फुज़ूल गोई, बे जा हंसी और नफ़्सानी ख़्वाहिशात की इत्तिबाअ से हम को बचा। हर तरह के गुनाह से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा और हमें हर दम ज़िक्रो दुरूद में मशगूल रहने की सआदत इनायत फ़रमा।

امين بجا وخاتم النبیین صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

हो गया क़ल्ब हाए सियाह लुत्फ़ नूरे ख़ुदा कीजिये

क़ल्ब पथर से भी सख़्त है इस को नरमी अता कीजिये

जगमगा दीजे क़ल्बे सियाह लुत्फ़ बदरुहुजा कीजिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 505)



म्यूज़िक सेन्टर बन्द कर दिया

ऐ आखिरत की बेहतरी का दर्द रखने वालो ! बे जा हंसी की आदत मिटाने, दिल आजारियों से खुद को बचाने और सन्जीदगी पाने के लिये आशिकाने रसूल की सोहबत में रहिये । आप की तरगीब के लिये एक “मदनी बहार” पेशे खिदमत है : एक इस्लामी भाई उस वक्त आठवीं क्लास में पढ़ते थे जब बुरे दोस्तों की सोहबत ने उन पर अपना रंग चढ़ाना शुरू किया । मैट्रिक के बा’द कोलेज में दाखिला हुवा तो गोया उन्हें हर बुरा काम करने की खुली छूट मिल गई ! शैतान ने हाथ पकड़ कर उन्हें तबाही के गढ़े में धकेल दिया । अब शराब नोशी, मारधाड़, जूआ और तरह तरह के बुरे काम किया करते थे । बा’ज अवक़ात तो सारी सारी रात जूआ खेलते और नशा करते हुए गुज़र जाती यहां तक कि फ़ज़्र की अज़ानें सुनाई देतीं लेकिन अफ़सोस ! वोह अपने दोस्तों के साथ मौज मस्तियों में लगे होते । अगर कभी उन की मां उन्हें समझाती भी तो उस से ज़बान दराज़ी किया करते बल्कि **مَعَادُ اللَّهِ** गालियां तक बक देते । उन्होंने ने अपने कमरे में चारों तरफ़ फ़िल्मी अदाकाराओं की तस्वीरें लगा रखी थीं और उन तस्वीरों के पीछे एक जगह “खुफ़्या ख़ाना” बना रखा था जहां हर वक्त शराब की बोतल मौजूद होती । इन्ही सियाह कारियों में मसरूफ़ रहते हुए 1998 ई. का साल आ गया । उन्होंने ने अपना “म्यूज़िक सेन्टर” खोल लिया, एक दिन वोह दुकान पर बैठे हुए थे कि इमामे वाले एक इस्लामी भाई ने उन्हें मक्तबतुल मदीना से जारी होने वाले सुन्तों भरे बयान की एक कैसिट दी और चलाने की दरख़्वास्त की, उन्होंने ने जूही कैसिट चलाई तो किसी मौलाना की आवाज़ सुनाई दी उन्होंने ने घबरा कर बन्द कर दी और इस्लामी

भाई को कैसिट वापस कर के कहने लगे : भाई ! मैं इन चीजों से इलर्जिक हूं, मैं यह कैसिट नहीं चला सकता। उस इस्लामी भाई ने गुस्सा करने के बजाए रोनी सूरत बना कर कहा : अगर यहां नहीं चला सकते तो बराहे करम ! यह कैसिट घर ले जाएं और सुन जरूर लीजियेगा। उन्होंने ने जान छुड़ाने के लिये उन से कैसिट ले कर जैकेट की जेब में डाल ली। रात जब सोने लगे तो उन्हें वोह कैसिट याद आई, सोचा कि सुन लेता हूं, सुब्ह अगर उस इस्लामी भाई ने पूछ लिया तो शरमिन्दगी होगी। जब उन्होंने ने वोह कैसिट चला कर सुनी तो सक्ते में आ गए, कैसिट ख़त्म होने के बा'द दोबारा रोते रोते सुनी। अपने गुनाहों से तौबा की और सुब्ह फ़ज़्र पढ़ने मस्जिद पहुंच गए। नमाज़ियों ने खुश गवार हैरत से उन की तरफ़ देखा कि येह शख़्स नमाज़ पढ़ने आ गया ? वोह भी फ़ज़्र की ! फिर उन्होंने ने अपना "म्यूज़िक सेन्टर" भी बन्द कर दिया और कुछ ही अर्से में दाढ़ी शरीफ़ से उन का चेहरा सज गया। फिर 2003 ई. में उन्हें मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में मदनी काफ़िला कोर्स करने की भी सआदत मिली।

الْحَمْدُ لِلَّهِ बारह माह के मदनी काफ़िले में सफ़र का मौक़अ़ मिले और दो काबीनात में मदनी काफ़िला जिम्मादार की हैसियत से दा'वते इस्लामी का काम करने की सआदत भी मुयस्सर हुई।

गर आए शराबी मिटे हर ख़राबी चढ़ाएगा ऐसा नशा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शिश, स. 647)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

तवज्जोह हटाने वाले मुआमलात से पहले फ़ारिग़ हो जाइये

नमाज़ के आगाज़ से क़ब्ल उन तमाम चीजों से खुद को फ़ारिग़



कर लीजिये, जो नमाज़ में तवज्जोह बटने और यादे इलाही से गाफ़िल करने का बाइस बन सकती हों नीज़ जगह पुर सुकून और शोरो गुल से दूर हो, सामने के पर्दे या जाए नमाज़ पर ऐसा नक्शो निगार, सिल्वटें और उभार वगैरा न हो, जिस से तवज्जोह बटे और खुशूओ खुजूअ में ख़लल पड़े। सख़्त सरदी और सख़्त गरमी से बचाव के अस्बाब भी इख़्तियार कीजिये। अगर खाने या पेशाब वगैरा की हाज़त हो तो उस से फ़ारिग़ हो जाइये।

समझदारी की बात (कौल व वाकिअ)

हज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते थे : “आदमी की समझदारी से है कि पहले ही अपना ज़रूरी काम निमटा ले ताकि नमाज़ शुरूअ करते वक़्त उस का दिल फ़ारिग़ हो।” (169/2, توت القلوب) ताबेई बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना मसरूक رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ अपने अहले ख़ाना से फ़रमाते : “(मुझ से मुतअल्लिक) अपनी तमाम हाज़तें मेरे नमाज़ शुरूअ करने से पहले पहले मुझे बयान कर दो।” (1611: تم, 112/2, طرية الاولياء)

दिल का खाने में फंसा रहना खुशूअ में रुकावट है

हज़रते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'ज़मी رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ इर्शाद फ़रमाते हैं : जिस बात से दिल बटे और (वोह बात) दफ़अ (या'नी दूर) कर सकता हो उसे बे दफ़अ किये हर नमाज़ मक्रूह है मसलन पाख़ाने या पेशाब या रियाह का ग़लबा हो, मगर जब वक़्त जाता हो तो पढ़ ले फिर फेरे। (या'नी वाजिबुल इअ़ादा की निय्यत से दोबारा पढ़े क्यूं कि नमाज़ मक्रूहे तहरीमी हुई थी) यूंही खाना सामने आ गया और उस की ख़्वाहिश हो। गरज़ कोई ऐसा अम्र दरपेश हो जिस से दिल बटे, खुशूअ में फ़र्क़ आए उन वक़्तों में भी नमाज़ पढ़ना मक्रूह है। (बहारे शरीअत, 1/457)

नमाज़ को “खाना” नहीं, “खाने” को नमाज़ बना दूँ !

शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफुल हक़ अमजदी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ फ़रमाते हैं : अगर खाना सामने रख दिया गया हो या वोह खा रहा हो कि जमाअत शुरूअ हो गई तो खाना छोड़ कर जमाअत के लिये जाना वाजिब नहीं और इसी के हुक्म में वोह सूरत भी है कि भूक शिदत की लगी हो और खाना तय्यार हो। सय्यिदुना इमामे आ 'जम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ) ने फ़रमाया : “नमाज़ को खाना बना दूँ कि नमाज़ के वक़्त दिल खाने में लगा रहे इस से बेहतर है कि खाने को नमाज़ बना दूँ कि खाते वक़्त दिल नमाज़ में लगा रहे।” येह उस वक़्त है जब नमाज़ के वक़्त में गुन्जाइश हो और अगर इस का अन्देशा हो कि खाते खाते नमाज़ का वक़्त निकल जाएगा या वक़ते मक्रूह आ जाएगा तो बहर हाल नमाज़ पहले पढ़ ले। (नुज़हतुल क़ारी, 2/338, 339)

जमाअत के लिये दौड़ना अच्छा नहीं

तक्बीरे ऊला या जमाअत के लिये दौड़ना मन्अ है, इस तरह अगर सांस फूल गया तो “खुशूअ” कहां से आएगा ? दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 168 सफ़हात की किताब, “जल्द बाज़ी के नुक़सानात” सफ़हा 31 ता 32 पर है : यकीनन तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ पढ़ना बहुत बड़ी सआदत है जैसा कि हज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللهُ عَنْهُ से मरवी है : फ़रमाने मुस्तफ़ि صَلَّ اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस शख़्स ने रिज़ाए इलाही के लिये चालीस दिन तक तक्बीरे ऊला के साथ बा जमाअत नमाज़ अदा की, उस के लिये दो किस्म की नजातें लिखी गई, एक नजात जहन्म से और दूसरी मुनाफ़क़त से। (ترمذی، 1/274، حدیث: 241) बा'जू इस्लामी भाई तक्बीरे ऊला पाने की जल्दी में दौड़ लगा देते हैं जिस की वजह से मस्जिद की ज़मीन पर धमक (या'नी आवाज़) पैदा होती है जो कि आदाबे मस्जिद के ख़िलाफ़ है।



दौड़ते हुए न आओ

हज़रते सय्यिदुना अबू हरैरा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को यह फ़रमाते हुए सुना कि “जब नमाज़ की तक्बीर कही जाए तो दौड़ते न आओ, बल्कि चलते हुए इत्मीनान के साथ आओ, जो पा लो वोह पढ़ लो, जो रह जाए पूरी कर लो।” (1360: 239, مسلم)

नमाज़ के लिये न दौड़ने के फ़ाएदे

हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحِمَهُ اللهُ عَلَيْهِ इस हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : या'नी जमाअत के लिये घबरा कर दौड़ते न आओ कि इस में गिर जाने, चोट खाने का अन्देशा है। इस से **चन्द मसअले** मा'लूम हुए : **एक** यह कि जमाअत में शामिल होने के लिये सुकून से आना मुस्तहब है, दौड़ना मुस्तहब के ख़िलाफ़ है, हराम नहीं। **दूसरे** यह कि (नमाज़ का) आख़िरी जुज़्ब (या'नी हिस्सा) मिल जाने से जमाअत मिल जाती है लिहाज़ा जो नमाज़े जुमुआ की अत्तहि़य्यात में मिल जाए वोह जुमुआ पढ़े (या'नी उस को जुमुआ की जमाअत मिल गई)। **तीसरे** यह कि जिस रकअत में मुक्त्तदी मिले वोह ता'दाद के लिहाज़ से रकअते अव्वल है और क़िराअत के लिहाज़ से रकअते आख़िरी। (मुफ़्ती साहिब मज़ीद लिखते हैं :) जब से वोह **नमाज़** के इरादे से घर से चला उसे **नमाज़** का सवाब मिल रहा है फिर तेज़ी क्यूं करता है ! क्यूं गिरता और चोट खाता है ! इत्मीनान से आए जो पाए उस को अदा करे। ख़याल रहे कि अगर तक्बीरे ऊला या रुकूअ पाने के लिये क़दरे (या'नी थोड़ी) तेज़ी से आए मगर न इतनी कि चोट लगने गिरने का अन्देशा हो, तो मुज़ायका नहीं। (मिरआतुल मनाज़ीह, 1/425, 426 मुलख़्ख़सन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❁❁❁ صَلَّى اللهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

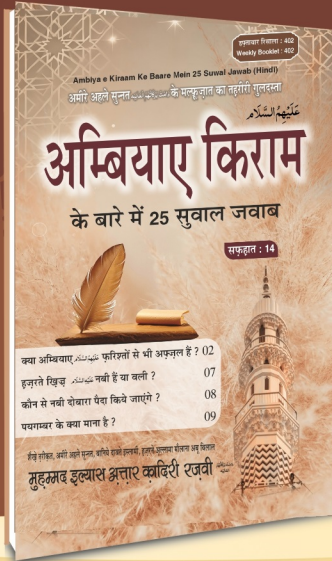


फ़ेहरिस्त

मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर	मज़ामीन	सफ़्हा नम्बर
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	रोता हुवा जहन्नम में दाख़िल होगा	13
आका की चार दुआएं	1	वोह फिर कभी हंसता न	
इल्मे नाफ़ेअ़ से दिल में		देखा गया (वाक़िआ)	13
खुशूअ़ पैदा होता है	2	जन्नत में कोई रोए तो	
“इल्मे नाफ़ेअ़” किसे कहते हैं ?	3	तअज़्जुब की बात है	14
शैतान क़रीब नहीं आता	3	मौत का यक़ीन रखने वाला	
दिलों को नर्म करने वाले काम	3	कैसे हंसे ?	14
दिल की सख्ती कैसे दूर हो ? (वाक़िआ)	4	40 साल तक न हंसे	14
दिल की पैदाइश का मक्सद	5	लिबास नेकों वाला और.....	14
गुनाहों से दिल काला हो जाता है	6	नमाज़ में हंसने के अहक़ाम	15
ज़ालिम से मिलना दिल काला करता है	7	म्यूज़िक सेन्टर बन्द कर दिया	16
गुनाह कुफ़्र के कासिद हैं	7	समझदारी की बात (कौल व वाक़िआ)	18
कोहे लुबनान के औलिया की नसीहत	10	दिल का खाने में फंसा रहना	
दिल की सख्ती का एक सबब		खुशूअ़ में रुकावट	18
ज़ियादा हंसना	11	नमाज़ को “खाना” नहीं,	
हंसना ग़फ़्लत की अ़लामत है	11	“खाने” को नमाज़ बना दूं !	19
क्या सहाबा हंसते थे ?	11	जमाअ़त के लिये दौड़ना अच्छ नहीं	19
दिल की मौत का सबब	12	दौड़ते हुए न आओ	20
अल्लाह से डरने वाले कौन हैं ?	13	नमाज़ के लिये न दौड़ने के फ़ाएदे	20



अगले हफ्ते का रिसाला



DAWAE ISLAMI
INDIA

CGN
Dekhte Rahiye



Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid,
Delhi-110006 📞 +91-8178862570

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha,
Mirzapur, Ahmedabad-380001 📞 +91-9327168200

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi
Post Office, Mumbai-400003 📞 +91-9320558372

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar
Road, Mominpura, Nagpur-440018 📞 +91-9326310099

🌐 www.maktabatulmadina.in ✉ feedbackmmhind@gmail.com

📞 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) 📞 +91-9978626025